संचार (Communication)

संचार : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और संचार करना उसकी प्रकृति है । अपने भावों व विचारों का आदान-प्रदान करना उसकी जन्मजात प्रकृति है । ऐसा माना जा सकता है कि मानव के अस्तित्व में आने के साथ ही संचार की आवश्यकता का अनुभव हो गया हो गया होगा । जोकि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता हो गया। संचार किसी भी समाज के लिए अति आवश्यक है । जो स्थान शरीर के लिये भोजन का है, वही समाज व्यवस्था में संचार का है । मानव का शारीरिक एवं मानसिक विकास पूरी तरह से संचार-प्रक्रिया से जुड़ा रहता है । जन्म से मृत्यु तक मनुष्य एक दूसरे से बातचीत के माध्यम से सम्बद्ध रहता है, एक दूसरे को जनता है, समझता है तथा परिपक्व होता है।

संचार क्या है ? (What is Communication ?)

सार्थक चिन्हों द्वारा सूचनाओं को आदान -प्रदान करने की प्रक्रिया संचार है। किसी सूचना या जानकारी को दूसरों तक पहुंचाना संचार है। जब मनुष्य अपने हाव-भाव, संकेतों और वाणी के माध्यम से सूचनाओं का आदान प्रदान आपस में करता है तो वह संचार है।

संचार की परिभाषा :

कम्युनिकेशन (Communications) शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस (Communis) से बना है जिसका अर्थ है to impart, make common। मन के विचारों व भावों का आदान-प्रदान करना अथवा विचारों को सर्वसामान्य बनाकर दूसरों के साथ बाँटना ही संचार है।

संचार शब्द, अंग्रेजी भाषा के शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका विकास Commune शब्द से हुआ है। जिसका अर्थ है आदान-प्रदान करना अर्थात बाँटना।

संचार एक आधुनिक विषय है। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, समाज कार्य जैसे विषयों से इसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। विभिन्न विचारकों ने इसकी परिभाषा को निम्नलिखित रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है।

चेरी के अनुसार : संचार उत्प्रेरक का आदान प्रदान है।

शेनन ने संचार को परिभाषित करते हुए कहा है : कि एक मस्तिष्क का दूसरे मस्तिष्क पर प्रभाव है ।

मिलेन ने संचार को प्रशासनिक दृष्टिकोण से परिभाषित किया है । आपके अनुसार, संचार प्रशासनिक संगठन की जीवन-रेखा है ।

बीबर के अनुसार : वे सभी तरीके जिनके द्वारा एक मानव दूसरे को प्रभावित कर सकता है, संचार के अन्तर्गत आते है ।

न्यूमैन एवं समर के दृष्टिकोण में : संचार दा या दो से अधिक व्यक्तियों के तथ्यों, विचारों तथा भावनाओं का पारस्परिक आदान-प्रदान है ।

विल्वर के अनुसार : संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा स्रोत से श्रोता तक संदेश पहुंचा है ।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि संचार एक प्रकार की साझेदारी है, जिसमें ज्ञान, विचारों, अनुभूतियों और सूचनाओं का अर्थ समझते हुए पारस्परिक आदान-प्रदान किया जाता है ।

संचार की प्रकृति (NATURE OF COMMUNICATION) :

(1) **संचार विज्ञान एवं कला दोनों है** (Communication is Science and Art both)—संचार प्रक्रिया में विज्ञान एवं कला दोनों के तत्व पाए जाते हैं। इसलिए संचार को विज्ञान एवं कला दोनों कहा जाता है।

(2) **संचार एक जन्मजात गुण है** (Communication is an Inborn Quality)—संचार एक जन्मजात, स्वाभाविक या प्राकृतिक गुण होता है। संचार जन्म, मृत्यु, सांस लेना, आदि की एक कला है अथवा स्वयं जीवित है।

(3) **संचार एक सामाजिक प्रक्रिया है** (Communication is a Social Process)—संचार केवल व्यावसायिक संस्थाओं में ही नहीं होता बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा यह प्रक्रिया अपनाई जाती है।

(4) **संचार एक मानवीय प्रक्रिया है** (Communication is a Human Process)–वास्तव में संचार एक मानवीय प्रक्रिया है, क्योंकि संचार के दोनों पक्ष—प्रेषक एवं प्राप्तकर्ता, सामाजिक प्राणी होते हैं और संचार की सम्पूर्ण प्रक्रिया व्यक्ति या व्यक्तियों के समूहों के मध्य ही सम्पन्न होती है।

(5) **संचार एक सार्वभौमिक प्रक्रिया** है (Communication is a Universal Process)—संचार के सिद्धांत सार्वभौमिक प्रकृति के होते हैं। संचार की सार्वभौमिकता या सर्वव्यापकता का सिद्धांत संचार की एक विशेषता है। वास्तव में, प्रभावी संचार की समस्या हर जगह व्याप्त है; जैसे व्यक्तिगत, सामूहिक, संस्था वार, पारिवारिक, राज्यीय, ट्रेड यूनियनों आदि की।

संचार की विशेषताएं (CHARACTERISTICS OF COMMUNICATION)

संचार के परम्परागत स्वरूप में पांच तत्व :

(1) सन्देशवाहक वक्ता अथवा लेखक, (Sender)

(2) विचार जो सन्देश, आदेश या अन्य रूप में है, (Massage)

(3) संवाहन कहने, लिखने अथवा जारी करने के रूप में, (Medium)

(4) सन्देश प्राप्त करने वाला, (Receiver)

(5) सन्देश प्राप्तकर्ता की प्रतिपुष्टि या प्रतिक्रिया (Feedback)

Sender >Massage >Medium >Receiver >Feedback

लेकिन संचार के आधुनिक स्वरूप का विश्लेषण किया जाए तो संचार के निम्नलिखित तत्व प्रकाश में आते हैं :

(1) **संचार एक सतत प्रक्रिया** (Communication is a Continuous Process)—संचार निरन्तर (सतत) चलने वाली प्रक्रिया है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ग्राहकों, कर्मचारियों, सरकार आदि बाह्य एवं आन्तरिक पक्षों के मध्य सन्देशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया व्यवसाय में निरन्तर बनी रहती है।

(2) **संचार अर्थ संचारित करने का माध्यम** (A Means to Convey Meaning)—संचार का आशय सूचनाओं एवं संदेशों को एक व्यक्ति (समूह) से दूसरे व्यक्ति (समूह) को भेजना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके लिए यह भी आवश्यक है कि सूचना अथवा संदेश प्राप्तकर्ता उसे उसी भाव (अर्थ) में समझे जिस भाव से उसे सूचना दी गई है।

इसलिए संचार प्रक्रिया में सूचना प्रेषण करने वाले को 'Encoder' तथा सूचना प्राप्त करने वाले को 'Decoder' कहा जाता है। इस प्रक्रिया को निम्न ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है :

(3) **संचार एक द्विमार्गी प्रक्रिया** (Communication is a two-way Process)—संचार दो तरफा प्रक्रिया है। संचार में दो व्यक्तियों अथवा समूहों के मध्य संदेश का आदान-प्रदान होता है। संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता संदेश भेजने वाले के सही अर्थ भाव को समझता है एवं अपनी प्रतिपुष्टि अथवा प्रतिक्रिया (Feedback) संदेश प्रेषक को प्रदान करता है। इस तरह संचार मूलतः द्विमार्गी है।

(4) **संचार माध्यम के विभिन्न प्रकार** (Different Channels of Communication)–आधुनिक युग में अनेक संचार माध्यम प्रयोग में लाए जाते हैं। सूचना क्रांति के वर्तमान युग में संचार के लिए परम्परागत माध्यम जैसे पत्राचार, टेलीफोन के साथ-साथ तीव्र गति वाले आधुनिक संचार माध्यम जैसे Tele fax, E-Mail, Video Conferencing आदि माध्यम प्रयोग में लाए जाते। संचार लिखित, मौखिक अथवा सांकेतिक होने के साथ-साथ एकमार्गीय , द्विमार्गीय एवं त्रिस्तरीय भी हो सकता है।